

26 वा

पाने.

26



अध्याय ॥२६॥

श्रीगुरुस्सीतारामचंद्रायेनमः॥ श्रीविंढलपरंब्रंष्ट्रेनमः॥ श्रीसंतसंजनायेनमः॥
ॐ देवसहजनिज॥ तुचीनैत्यनुर्भजआष्टाभज॥ तुविश्वामाविश्वभज॥ गुरुत्वे
तुजगौरव॥ १॥ नीजशिष्याचियाभावार्था॥ तुगुरुनामेआभयदाता॥ अभय
देउनितक्षता॥ भववेथानिवारिणी॥ २॥ नीकारनिजंन्तमरण॥ आपणाभेट
सिआपण॥ तेहागुरुसिष्यनमिसंपूर्ण॥ तुमैयेकपणआभासे॥ तेयेक
पणयाहातादिदि॥ येकाजनाईनीउमोडो॥ गुरुत्वंकोदेसकउभष्टि॥ स्थानंद
पुष्टिजगनंदे॥ ३॥ तोस्थानंदैकविद्याना॥ जगद्गुरुजनाईना॥ येकाजनाई
नादरणा॥ येकियेकयकदृढकेला॥ ४॥ दृढकेलेजेयकपण॥ तेहिसद्वृत्ताला
आपण॥ तेथेरुदरेमिनुपवा॥ येकाजनाईनेयेकत्वे॥ ५॥ यापरियेकाकिये
कला॥ येकाजनाईनेकविताकेला॥ तोयेकादशाभाषावला॥ येकवृत्तबोधा॥ ६॥
याचेकविताचिनिजस्थिति॥ पावलापुररवाभरपति॥ हृदतापआनुविरक्ति॥

रुलि

भगवद्भक्ति ससंगे ॥ ८ ॥ हे संता वि सावे आध्याइ जाण स्य मुखे बो लि ला श्री छं छम ॥
 ससंगे भगवद्भजन ते ऐवै राग्य संपूर्ण साधका ॥ ९ ॥ न करिता भगवद्भक्ति कस्त
 नुपजे विरक्ति ॥ विरक्ति की विण भगवत्प्राप्ति न हे कं प्लाति साधका ॥ १० ॥ ऐसे
 जो लि ला श्री छं छम ते उं द्रवे जिवि धरो ल पूर्ण भगवद्भक्ति पुजा विधान ॥ कीया योग
 जाण पुसतु ॥ ११ ॥ उं द्रव बा ॥ कीया योग समा चक्षुः भवदारा धनं प्र
 भो ॥ यस्मात्तां ये यथा च्येति सा तत्त सा तत्तर्षभ ॥ १२ ॥ टिका ॥ नीज भक्त
 आनुग्रहार्थ ॥ तु संतु मुनि श्री आनं ॥ तु से नीज भक्त जे सा तत्त ते तुज पूजि
 त को ऐ विधि ॥ १३ ॥ ते सा धु चे आराधन ॥ तु से कीया योग पुजन रुपा कर
 नी आपण ॥ मज सं पूर्ण सा गावे ॥ १४ ॥ छ ए सि आ नी खा सि पु सावे हे मा
 से नि सर्व धान कवे ॥ तु ज सा ओ नी दुरी जावे हे ला ज हि जिवे सा हवे ना ॥ १५ ॥
 मितु सा सा सु जिवे भावे ॥ तु से नि प्र भू त गौ रवे ॥ मी क छि का कं ना गावे ॥ १६ ॥

॥१५॥
कृपाप्रभवेत्तुमेनी तु कृपा कृपायुं क॥ कृपेनी होसि भक्तानां भक्त॥ द्यात्तु सा वमि चरणां
यो भक्तै कित॥ सक विगुह्यार्थ निपु से ॥१६॥ इतु का करो निजा सास्त्र॥ का पु स सि पु
जा प्र कार॥ हा श्रेष्ठ श्रेष्ठ के ला विचार तो निज निद्रा र आवधारि ॥१७॥ श्रेष्ठ
एतद्वदंति॥ मुनयो मुहु निश्रिय संतु ग॥ नारदो भगवानो स आचार्यो गीत्मा
रसः सुत ॥ २॥ टिका॥ पूर्व विद विचार नीष्टा सुवय मुनी श्रेष्ठ॥ हे चि आनुवाद
ले पष्ट॥ आति वरिष्ट विवेकी ॥१८॥ तुजा विधान प्रसिद्ध बोली ला देवर पिना
रद॥ अंगिरा प्राचा पुत्र आगाध॥ देव पुत्र प्रबुद्ध हे बोले ॥१९॥ जो व्यास पु संस
वती चा सुनु॥ जो कानाराय एमु मुनि नेतु जे ए प्रगट के ला वेदा थु॥ जे विख्या
तु महा कवि ॥ २०॥ पुराण कविकेता तो सांग॥ या लागी व्यासो छिष्ट मिदं ज
ग॥ ने ए हि भगवतु जा मार्ग॥ हा क्रिया योग बोली जे ॥ २१॥ आ सोई न राचि
चावटि॥ जो पितामहो सक उष्टि॥ जो जंम ला निष्ठु चा पोटि॥ ने ए गी ह्या

गोष्टिदृढकेल्या ॥ २२ ॥ **श्लोक** ॥ निःसृतं ते मुखं भोजायदाह भगवानुज ॥ पुंनेभ्यो
 भृगुमुखेभ्यो देवैश्च भगवान्भव ॥ २३ ॥ **टिका** ॥ तुवा कंष्ट्राचिये आदि ॥ हेचि
 पूजाविधानविधि ॥ उपदेशितानुप्रविधि ॥ स्वये त्रिभुद्विविधाता ॥ २४ ॥ **तलेहिक**
 ल्मादिसिआपण ॥ नाभिकमळासनीवै सोन ॥ भृगुकश्यपा ॥ २५ ॥ **टिका** ॥ पुत्रासिजा
 ण ॥ हे पुजाविधान उपदेशिते ॥ २६ ॥ **श्लोक** ॥ माहादेवहि आपण ॥ हे क्रियायोग
 विधिविधान ॥ भावे भवानि सीजण ॥ जे निरापणये कांति ॥ २७ ॥ **श्लोक**
 एतद्वै सार्वर्णमौनो भ्रमाणां च संमतं ॥ श्रेयसे मुत्तमं मन्ये स्त्रीभुक्ताणां च मा
 मानद ॥ २८ ॥ **टिका** ॥ एवं हे श्रेष्ठ परंपरा ॥ तुवा प्रगटकेलिनिर्धारा ॥ दिनद
 याचतुखरा ॥ साहिविचारा आवधारी ॥ २९ ॥ **श्लोक** ॥ आश्रमधर्मा विधीविधान ॥
 तेथे अधिकारि द्विजमेजन ॥ सासिकर्मबाधाबाधीगहन ॥ गुनलेब्राह्म
 णकर्मटह ॥ ३० ॥ **श्लोक** ॥ तैसेन केतुसे भजन ॥ भजनाधीकारि सर्ववर्ग ॥ ३१ ॥

नोद्धारिभजनपूर्णे ॥ स्त्रियाश्चरुजन उद्भरिते ॥ २४ ॥ कमिगुंतले उतामोलम ॥ भजने उद्भ
रिते अधम ॥ भजन सर्वा सिहे सुगम ॥ भजने स्वधर्म साधक ॥ २५ ॥ भजन महिमा
निसिम ॥ अधमा पदवी उत्तमोलम ॥ भजन हिन जे उंतम ॥ ते आधमा धम स्वये हे
ति ॥ २६ ॥ सर्ववर्ण आणी अभम ॥ भगव भजने गती उंतम ॥ हे चि भक्तीचे नि
जवर्म ॥ भक्तीच्या मजण ति ॥ २७ ॥ कर्तनीय ॥ भगवदुक्ति ॥ स्वये भगवदु
पहोति ॥ या लागी भक्तां ते श्रीपति ॥ जे श्रीप्रीतानी सी ॥ २८ ॥ तुझे भजन
पूजन करिता ॥ तुजि भक्ता चाहे सिताता ॥ तुची भक्ता सिसंमान दाता
ते पुन कथामज साग ॥ २९ ॥ भक्ता कर्म पंराक्ष कर्मबंध विमोचनं
भक्ताय चानुरक्ताय बृहि विश्वेश्वर स्व ॥ ३० ॥ टिका कमलनाभिनाराय
ण ॥ भक्त विश्राम कमलनयना ॥ कमलाख्या कमलवदना ॥ विनंति श्री
हं हमा आवधारि ॥ ३१ ॥ तुवा पाहिल्या ह्या दृष्टि ॥ ताका

४) कपैउटाउति सुटतिकर्मबंधाचीयागटि। स्वानं ह्पुष्टि नीजभक्ता ॥ ३५ ॥ जेवि
 घृताचेकदिनपण। क्षणेवीरविस्तर्यकीरण। ते विकर्मबंधा निर्दोषण। तुसे
 कृपावलोकनकरिह्म ॥ ३६ ॥ कासेधवाचा महागीरि। जेविवीरेमहासा
 मुहामासारि। तेविकर्मबंधाबोहरि। ह्मिह्मपाकरि श्रीह्म ॥ ३७ ॥ तुसीजा
 लियाह्मपादुषि। कर्माकर्मासिपडेनुदि। जेवीसूर्योदयापादि। नानुउभेदि
 स्वद्योत ॥ ३८ ॥ तमिदाटति स्वद्योतकादि। तविआशानीकर्माची आवडि। तुसी
 कृपासूर्यजोउल्माजोडि। जालिबापुडि विदोनी ॥ ३९ ॥ ऐसीयानीष्कर्मह्मपा
 युक्त। तुसेनादति निजभक्त। जेकाविषईआति विरक्त। सदाअनुरक्त हरिच
 रणि ॥ ४० ॥ ते कृपेचेआयत्तन। तुसे भजनपुज्याविधान। ते मजसांगसाग
 कृपाकरन। मीआतिदिन तुसेपैतुसे ॥ ४१ ॥ एगसिलुजहाआधिकारनाहि
 तरिचराएगआलोनुजपाहि। दारएगगताचितुस्यायाद। उपक्षानाहि श्रीह्म ॥ ४२ ॥

तुवापभुउं द्रिगे गजगी धासी ॥ गणिके तारिने कुटनिसी ॥ ते बीरूपा क
मि आस्तासी ॥ रूषी केरी कृपां ॥ हे एसी व्रं हाशी उआसता भट्टिसी ॥ मज
सिपु सावा व्याची श्रं द्वा मोडी ॥ कै से नीपा बाढ ल्यापोटि ॥ ते कते गोदिसागे
न ॥ ४४ ॥ ब्रं हा जगा चकती होय ॥ तोहि वीसरता निजात्म सोय ॥ तो तुझ्या पोटा
ये उनि पोह ॥ नीज शान लोह ॥ तुसे नी ॥ ४५ ॥ सी उपां वनी बाहे माथा ॥ तुसे ना य
म सहाज पत्ता ॥ तुसे कपे सौव न ह्वना ॥ तोहि नीजात्म तापावला ॥ ४६ ॥
यालागी तुई श्वरा चाई श्वर ॥ नियंता नीयंता सर्वेश्वर ॥ विश्वी विश्व विश्व
भर ॥ विश्वेश्वर तुझा ॥ ४७ ॥ याप वि तुमान विधि ॥ पुर्ण बोधाचा उदधि
जले होय निजात्म सिद्धि ॥ ते पूजा विधि मज साग ॥ ४८ ॥ रोसा भक्तव
चने संतोषला ॥ पूर्ण निज बोद्धे देवला ॥ निजात्म कृपा कळवकीला ॥
काय बोली श्री हनुम ॥ ४९ ॥ लोक ॥ श्री भगवानुवाच ॥ नहं तो नंत पार

स्य कर्मकांडस्य चोद्धव संक्षीप्तं वर्णं ईष्ट्या मियथावदनुपु
 वर्णः ॥ ६ ॥ त्रिका ॥ ज्याने एकतावचन ॥ वेस्वाक्यापडे मौन ॥ ज्या
 चिकरिता आटवण ॥ मनपणामन स्वये मुने ॥ ५० ॥ जो वेदार्थ प्रकाशक ॥ जो
 आर्काचा दिओ अर्क ॥ जो उद्भव सिधु नायक ॥ स्वमुखे दे स्वबोलन ॥ ५१ ॥
 अगमनी गमोक्त प्रकार ॥ मोक्ष पुजा विधि सविस्तर ॥ सागना अनंत आ
 पार ॥ न केव पार ब्रह्मादिका ॥ ५२ ॥ उद्भव एकतांतुत ॥ मिष्टादिष्टो जाळो
 वक्ता ॥ तरि पुजा विधान कथा ॥ सगळी सर्वथा न सागवे ॥ ५३ ॥ जहि जाले आ
 लिसं शान ॥ तरि पुजा विधी वि ॥ ५४ ॥ सागवया समर्थ पण ॥ सर्वथा जा
 णन बोलवे ॥ ५४ ॥ एवं पूवोक्त प्र ॥ कार ॥ आगमनी गमनी जसार नि
 वडनी संक्षेपाकार ॥ तुज मीतार सागेन ॥ ५५ ॥ पूजा विधी निजसार ॥ त्रिवी
 ध विधि त्री प्रकार ॥ एक हाचा हिचि चार ॥ चिछि उपचार विभागे ॥ ५६ ॥

५८
श्लोकवैदिकस्तांत्रिकोमिश्रइतिमेविविधोसुखाः॥ त्रयाणामपि
तेनैव विधिनामार्चयेत्॥ १७ ॥ **वैदिक**॥ वेदिकमंत्रवेदिकेअंगवेदोक्तमासिपु
जासांग॥ यानाववैदिकमार्ग॥ अंगंप्रयोगतोअश्व॥ ५४ ॥ आगमयीमंत्रजा
गमनिअंग॥ मासिअगमोक्तपुजासांग॥ यानाववैदिकमार्ग॥ मिश्रप्रसंगतोअ
इक॥ ५८ ॥ वेदमन्त्रिचेतांश्रीअंग॥ एवंमिश्रीतउभयभाग॥ मासिपुजानिपुजेसांग
मीश्रमार्गयानाव॥ ५९ ॥ हेतुविधिविधिजासांग॥ तोजाणमाज्ञात्रीविधन्याग
पलेमीसंतापेश्रीरंग॥ पार्श्वदेशीयानपरिवार॥ ६० ॥ तेसेमाज्ञेत्रिविधभज
न॥ जेथेज्याचिअंधापूणे॥ सावित्रीकृतिपूजन॥ मजत्रुष्टिसमानभावा
थे॥ ६१ ॥ भावार्थेजेमाज्ञेपूजन॥ तेहेनुसंनुसजनादेन॥ हाआगमोक्तमि
यज्ञसंपूर्ण॥ त्रिविधक्षरणसमसाम्य॥ ६२ ॥ वेदिकापित्रिविधगति
पूजितात्रुष्टमीश्रीपति॥ राजाभाषिकाराचिस्थिति॥ एकमुजप्रतिसांगे

न॥ ६६॥ श्लोक॥ यदास्य निगमेनोक्त द्विजत्वं प्राप्य पुरुषः॥ यथायजेत मां भक्त्या श्रद्धा
 यातनी बोधये॥ ६७॥ टिका॥ द्विजन्मेजेत्नी नीवर्णो स्याच्चेत्ताधिकार लक्षणा गभी
 ष्ट मि उपनयनं तै आधिकार पूर्णं श्राद्धाग॥ ६८॥ क्षेत्रीयाया आधिकार गुण
 वारा वरणा दत्त बंध॥ सोऽथा वरणा प्र सिधौ वन बंध वै श्यामि॥ ६९॥ गायत्री
 उपदेश पादो न॥ दुसरे जं न उपनयनं॥ याना नीत्रिजन्म जाण॥ द्विजन्मे श्रीव
 र्णवैदोक्त विधि॥ ६६॥ वेदोक्त आधिकार लक्षणा याना व उद्धवा जाण॥
 जानामाक्षी पूजा विधि स्थाने न सं पूर्ण निज भक्ता॥ ६७॥ श्लोक॥
 आर्थायां कृच्छ्रं तिले गोवास्त्ये पक्कं हृदि वा द्विजे॥ इव्येण भक्तियुक्ते
 र्ध्वं स्वगुरु मां मया यथा॥ ७०॥ टिका॥ माक्षे पूजा व्या आधिष्ठानं अष्ट
 विध पूजा स्थानं॥ स्याच्चेहि निज लक्षणा॥ उ ए खु न ते जैका॥ ६८॥ प्रिय प्र
 तिमा पूजा स्थानं॥ हे माक्षे प्रथम आधिष्ठानं॥ का पृथ्वी त वी स्तं डि लि

६४
जाण॥ पूजास्थानदुसरे॥ ६९॥ आग्निचे तेजस्य रूपमासे॥ ते पूजास्थाता जाणि
जे॥ सूर्यमंडलिजे पूजाकिजे॥ ते चौथे मासे पूजास्थान॥ ७०॥ उदकीजे मा
से पूजन॥ ते पाचवे पूजास्थान॥ द्वादशीजे मासे आवाहन॥ ते पूजास्थान सा
हावे॥ ७१॥ सकळ पूजा मासि जाण॥ मुख्यं तु पुज्य ब्राह्मण॥ ते सात वे पु
जास्थान॥ उं ह्वा जाण आतिशेय॥ ७२॥ सकळ पुज्या पुंज्य पुंज्य च पुजा
जाव रिष्टावरिष्टवरिष्टवोजा॥ तेन वेदता आलामासा वं शु॥ गुन्तरा
जा॥ सर्वासि॥ ७३॥ ज्याचे सद्गुरु वरिताचरण॥ मिसुरवाचे ब्रह्मपू
र्ण॥ ज्याचे सद्गुरु पेकरिता स्तवन॥ मापरमात्मा जाण उल्लासे॥ ७४॥ सं
द्गुरुचे नाम स्मरण॥ निर्दोष भव भयदाकरण॥ नीवारिजं नमरण॥
निववितं पूर्ण जिव बाधे॥ ७५॥ तोमी परमात्मा नारायण॥ गुरु रू
पे प्रगटुनि जाण॥ परब्रह्माचे पूर्ण परण॥ शिष्यद्वारा संपूर्ण प्रका

रा. ७६ ब्रह्माचे ब्रह्मपण संदुते चेनी संसृजाण येवडे आगा धर्महिमान
अतिगहनगुरुचे ७७ एव सद्गुरु शानदान जो हरिहरावं यशस्वर्ग तो
सदृपमासे आपिष्टान हे पूजा स्थान अटवे ७८ हे अटवे पूजा स्था
न अखंड अटवे अटवण तारे अटवे सांग संस्कार पुंड्रवामी जाण
पर जिलो ७९ एव हि अटवे पूजा स्थान नुज सागीत लिखु न
क्षणे येथील पूजे चित्क्षणे ते भिन्न परे सांगे ८० सकळ अ
पिष्टानि गोडपण जे पूजे ते सांगे ८१ ते पूजे ये मुंख्य लक्षण
निजवर्म खुणते अक ८२ सांडुनी लोक रंजन व्यापार सजुनी दांभि
क उपचार दचडुनी षट्पावेकार भजन तत्पर सद्भाव ८३ हे अ
शोम हा पूजा स्थान येथे आमाई केजे ते भजन ते ते आती गोडपू
जन पुंड्रवामी जाण निश्चीत ८४ येथे जे सेवा ते आति वध्व भंदे

वाधिदेवा॥ आता पूजा विधि आघवा॥ एक वरवासागेन॥ ८४॥ श्लोक॥ पर्व
स्नानं प्रकुर्वीत धौत दत्तों गभुद्भये॥ उभये रपिच स्नानं मंत्रैर्मुद्गहणं दि
नां॥ १०॥ टिका॥ मळसाग देत धावन॥ येथा काळि करु निज्ञान देह शुद्धे
र्थ करावे स्नान॥ मनीका मळन हवेक॥ ८५॥ ऐसे जालिया मळ स्नान
मग करावे मंत्र स्नान॥ वैदिकी तंत्रि कि विधान॥ दिक्षा गृह्ये
था विधि॥ ८६॥ जैसा संधु रसं पदवी॥ तेसा चालवावा आ म्ना वो सा
विधि स्नान कर॥ नी पाहा हो॥ निर्मल भावे धरावा॥ ८७॥ श्लोक॥ संध्या
पास्यदिक मालि बेदेना चोदित निम॥ सजां नैक लभ्य-सम्यक् संक
पूः कर्म पावनि॥ ११॥ टिका॥ वण भिम नीज विधि सी॥ विदिसं ध्यावो
ल्लि जैसि॥ ते ते वण भिमि संध्या तेसि॥ नीं हनै मी स सी कुरावि॥ ८८॥
वेदोक्त आचारा वे स्वकर्म॥ निशेष सागावे नि सी ध्यकर्म॥ याना व
शुद्ध धर्म॥ उत्तमोत्तम आधिका रि॥ ८९॥ वेदोक्त सां उनें स्व धर्म॥ हा॥

चिमुख्येत्ते आति भधर्म ताता आलिया परब्रंत्ता नयागीता कर्मस्वयेरा
 हे ॥ ७० ॥ स्वयेस्वधर्म जो सा उणे ते वी आधर्मा ने मुंख्य ठाणे स्वधर्मे चित
 भु द्विसा धर्मे या एका गिह्या गणे अहंता ॥ ७१ ॥ ते थे स्वधर्म अचरता ए
 सा भावो उपजे वीता मीन के ये थे कर्म कर्ता फळ मोला मीन हे ॥ ७२ ॥
 दे हो ज उ मु अ चेतना या सी चेत वी ज नी ज नाई न ते थे माझे मोप ए क
 ते प ए सब था जाण रि ये ना ॥ ७३ ॥ मु द्वी ने कर्मा चर ए ते भावार्थ
 भा वि ब्रं हार प ए या प रि नी रा नि न न मा रे उपासन साधका ॥ ७४ ॥
 मा क्षि प्र ती मा पू जा वि धा न ते प्र य म ह जा स्थान ते प्रतिमा की या ल
 क्षण ते क सं र ए उ द्व वा ॥ ७५ ॥ प्र जो का रो लि हार मै यी लो हि ले व्या ले
 स्वा ध सै क ता ॥ मनो मयी मणी मयि प्र ति मा ष्ट वि धा स्मृ ता ॥ १२ ॥
 टिका ॥ अष्ट धा प्रतिमा स्थि ति ॥ या पु नि ता स ध श्रे य दे ति ॥ ऐ सि
 या प्रतिमा चि ज्ञा ति ॥ ते क लु ज प्र ति सा गे न ॥ ७६ ॥ गं डिका दि शि ॥ ७७ ॥

कामुर्ति कांदास प्रलकाष्टव्यक्ती ॥ अथ स्वरूप दिधातुमुर्ति संघप्रका
 तिसाधका ॥ ८७ ॥ अतिकाकापड किटनमुर्ति ॥ म्यानावलेप्याहल एजे
 नि ॥ कास्थतिनी लिहीली आतिशीति ॥ स्यालें स्या मुर्तिहेजका ॥ ८८
 वाळवेचीके ॥ लीजेमुर्ति ॥ लीनावसिकेतामुर्ति ॥ एणति ने हिगापं
 ज्यमुर्ति ॥ स्वरूप व्यक्तिसमान ॥ ८९ ॥ मुर्तिरुत्तमयी सो ज्वळहीरामके
 तड्डनीका ॥ पद्मरागमुकाफ ॥ ९० ॥ नीके वंज आतिपुंज्या ॥ ९० ॥ म्हा
 र्तिमाजिआतिप्राधान्य ॥ मनोमयो मुर्तिपावन ॥ जिचे करिताउपा
 सन ॥ समाधानसाधका ॥ ९१ ॥ न विप्रतिमाहजाविधान ॥ स्थावरजं
 गमलक्षणा ॥ तेहिअर्थीचेनीरापन ॥ विषदश्रीकृष्णसागत ॥ २
 श्लोक ॥ चकाचळेति द्विविधा प्रतिष्ठा जीवमंदिर ॥ उदासावासनेन
 स्तस्थीरायाउधवाचने ॥ ९२ ॥ टिका ॥ अचेतनाचेतनप्रकार
 जडानेजीव विसाचार ॥ जीवराक्षींनात्रा ॥ मुख्यपरमेश्वरबो

लीजे ३॥ भक्तभावार्थसाचार॥ याजिवानिजमंरि॥ प्रतिमाजंगमस्था
वर॥ आगमशास्त्रसंमते॥ यथेच्छावरमुक्तिप्रेजन॥ साधकेकरिताआ
पण॥ नल्गेआवाहनविसर्जन॥ तेथेआधिष्ठानस्वयंभ॥ ५॥ श्लोका
अस्तीरायां विकल्पस्यास्येति॥ भवेदयं स्तपनं त्रिविधं पायाम
न्यत्रपरिमार्जनं॥ १४॥ टिका॥ मप्रतिमाचोराईआवाहनविस
र्जनपाहि॥ येकिआहेयेकीनाहि॥ तहिविभाग॥ श्लोकायाग्राममु
तिसीजाण॥ स्वयंभमासेआधिष्ठान॥ तेथेआवाहनविसर्जन॥ सर्वथाजा
णलागेना॥ ७॥ राखियामायास्तु॥ ज्याचेरजेसीअसेफुदका॥ ते
येपरमात्मामिनिजसरवा॥ सर्वथादेखानास्तु॥ ८॥ ईतरमुक्तिजंगमा
जाण॥ तेथेआवाहनविसर्जन॥ साक्ष्येकरावेआपण॥ हेचिविधी
विधानूअगमोक्त॥ ९॥ स्तुतिमुक्तिआवाहन॥ सवेचीपूजाअंति
विसर्जन॥ हेउभयभावविधान॥ स्तुतिजिजाणआवरयक॥ १०॥ आ

११५
पलेहृदईचा-चीघन॥ मुर्तिमाजिकिजेआवाहन॥ रजांतिकरुनिविसर्जन॥ देवोहृद
ईटेवावा॥ ११५॥ येथेआपणचिब्रह्मपरिपूर्ण॥ हेचिहोवाक्यानीजस्मरण॥ आ
वाहनविसर्जनजाण॥ निजाल्मआटवनसाधका॥ ११६॥ हाअगमीचा निजाल्म
भाबो॥ आपण-चीअपलादेवो॥ आपलाअपणपुजकुपाहो॥ हानीजाल्मअ
टवोनीजपुजे॥ ११७॥ देवहोउनीदेवपूजिजे॥ निजाल्मगोउदवाजे॥ उपासना
खांडव्याजेउद्धवासीदिजेभीकडे॥ ११८॥ निजाल्मनानिजगोडि॥ प्रतिपदि
नलभतारोकडि॥ उपासनातडोडि॥ कोणदोकडिसोसिल॥ ११९॥ हेआग
मिचे निजगुह्यजाण॥ प्रतिपदिपुस्तमंपक्ष॥ साधकस्वयेहोती-चीघन
तेहेउपासनउद्धवा॥ १२०॥ ऐसेभीकताकहमवचन॥ उद्धउस्यानेदजाल्म
पूर्ण॥ धावोनिधरिलेहृदमचरण॥ हेसमूहनिरोपसु॥ मजसाग॥ १२१॥
तवदेवहलेस्त्रीररोहे॥ जेहेअगमोक्तगुह्यओले॥ तेमाझेहृदपेविन
पोहे॥ प्राप्तनहोयसाधका॥ १२२॥ आगमोक्तगुह्यगहन॥ आसोहमांस

अवे

गुप्तधनं तुवापुसिले पूजाविधानं। औकसावधानं उद्भवा ॥ १७ ॥ लेप्यालेखा
 अपामुर्तिजोण। सासीकरावेनास्मान्। ईतरामुर्तिसिस्तपन। यथाविधानं
 उद्भवा ॥ २० ॥ करावे ॥ २० ॥ श्लोकः ॥ इत्येवमसिधेर्मयागः प्रतिमादिष्वमा
 नः भक्तस्य च यथा लब्धौ हृदि मानेन चैव हि ॥ १५ ॥ टिका ॥ पुजकुसकाम
 होयचांग। नैरजाद्रव्यहेसांग पूजासाधने जातियावंग। फळनिर्व्य
 गउपजेना ॥ २१ ॥ भक्तनिष्कामचाउकोडे। तेपुजाह्व्याचेसाकडे। सर्व
 थाकाहिनपडे ॥ भक्तभावेआवंगेभगवंता ॥ २२ ॥ तेथेआनायासेजेप्रा
 य ॥ तऐभगवंतहोयतृप्ततापिपूजायागयथोक्त ॥ जाणनिश्चीत
 उद्भवा ॥ २३ ॥ निष्कामवृत्तिकळभळदुर्वोक्तिकाफळमळनिर्मळ
 जळ ॥ ईतुकेनिपूजायागसकळ ॥ होयआविकळमद्भवे ॥ २४ ॥ जेथेमा
 सासद्भावोदृष्ट ॥ तेथेउपचाराचाकोणपाड ॥ भक्ताचाभावोधीम
 जगोड ॥ तेऐसेखेसुखाडमद्भक्ता ॥ २५ ॥ जाउयउपचाराजेकाहेहि ॥ २६ ॥

(104)

ते प्रतिमा पूजे सी पाहि मानस पूजे चात्तवदई ॥ वाणी भाहि उपचारा ॥ २४ ॥ ने
थे मनचि होय मासी मूर्ति मनोमय उपचार संपत्ति ॥ नीलो भेजे प्रजआ
पिति ॥ नेणे श्रीपति संतुष्ट ॥ २५ ॥ प्रतिमा दिआष्टौ पूजा स्थान ॥ यथोक्त
पूजेचे विधान ॥ तुजमी सांग सांगेन ॥ सावधान उद्भवा ॥ २६ ॥ श्लोक ॥
स्नानांतरं कारणं प्रथमं श्रद्धां नमो ॥ स्फुटिलिखनं विन्यासो वक्तुः
वाज्यं हुनेह वि ॥ १६ ॥ स्तुतिं च मन्त्रं च प्रथमं लिखेत् संकीर्तनादिभिः ॥ १७
॥ टिका ॥ प्रतिमा मुनीं पूजां स्फुटिलिखनं मूर्तिं संजे महास्तपनं ॥ या नाव
बोलीजे स्नान ॥ सांग भूषण मन्त्रादि ॥ २४ ॥ जो लोकि उंतम प्रकार ॥ का
ण आपनौ सिजे प्रियकर ॥ सांग पूजा सपरिकार ॥ हा प्रतिमा पूजा प्रकार ते
क विन्यास स्फुटिलिखाचा ॥ २५ ॥ स्फुटिलिखे पूजा स्थान ॥ तेथे तत्वाचे धरनि
ध्यान ॥ करावे तत्र विन्यास लेखन ॥ पूजा विधान या हेतु ॥ २६ ॥ अस्ततत्वादि
विवंच ॥ स्फुटिली विवंचुनि स्नाच ॥ हृदय सिर सिरवा कवच ॥ नेत्र अक्ष्यादि सं

(11)

धनिजपूजा ॥ १२ ॥ आग्नीध्यादग्निजे पूजनं तेथे करनी मासे ध्यान अस्मि वृत्त
 हविहवन हे पूजा विधान आग्निचे ॥ १३ ॥ आग्निदेवाचे वदन येणे विभवासे
 संपूर्ण हविहव्य करिता हवन अग्नि पूजन नमो हनु ॥ १४ ॥ विधारिता श्रुति
 चा अर्थ आपो नारायण सांक्षान तेथे पूजा विधान यथोक्त जच्छिजक्यु
 क्त तर्पण ॥ १५ ॥ हृदये मन्त्रे पूजा स्थान तेथे मने मनाचे अर्चन मनोम
 य मुर्तिसंपूर्ण पूजा विधान माननीक ॥ १६ ॥ मासे मुंन्यत्ते आपिष्टा
 न ब्रह्म मुर्ति जे ब्राह्मण संद्भूत ते पूजा स्थान सवार्थ श्रेष्ठ पावन
 तेथि लपूजन ते असे ॥ १७ ॥ जिव सवसे सी अपण सासी रिघाचे आनन्य
 रारण ह्याच्या वचना सिपार नी श्रय ज्ञाण विकावा ॥ १८ ॥ गुरु निनीच
 सेवा सेवन आवडि करणे अपण हे चित्तेथी लपूजा विधान येणे
 सुरवे संपन्न साधका ॥ १९ ॥ संद्भूत सेवा करिता पाहि ब्रह्म सायुंज्य
 लागे पारि गुरु सेवे वरते काहि श्रेष्ठ नाहि साधन ॥ २० ॥ संद्भूत स



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com